६८ मांगल्य-१: जीवन मांगल्

दिनांक १८-०६-२०१२

जागृति सहज प्रमाण - अमानवीयता से मानवीयता, मानवीयता से देव मानवीयता

जागृति का प्रमाण मानवीयता, देव मानवीयता तथा दिव्य मानवीयता में होता है | यही चेतना जागृति है | चेतना जागृति का फल ही है मूल्य अनुभूति | मूल्य अनुभूति का प्रमाण ही मानव परम्परा है | मानव परम्परा में ही व्यवहार प्रमाण परम्परा से मानवीय परम्परा, विचार प्रमाण परम्परा से देव मानवीय परम्परा, अनुभव प्रमाण परम्परा से दिव्य मानवीय परम्परा जागृति का प्रमाण है | इसे पाने के लिये सदियों से मानव जात प्रयत्न किया है | इस क्रम में मानव केवल जीवों से अच्छा जीने के क्रम में ही रह गया | जीवों से अच्छा जीने के क्रम में आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण और दूरदर्शन को ही चेतना विकास का प्रमाण माना है | इसका परम्परा बनाने के क्रम में व्यापार को सार्वभौम माना है | धोखाधड़ी के बिना व्यापर नहीं होता है | धोखाधड़ी के साथ परम्परा बनता नहीं है | फलस्वरूप पुनर्विचार की आवश्यकता है | पुनर्विचार के फलस्वरूप विकल्प, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के रूप में प्रस्तुत है | इसका आँकलन करना आवश्यक है क्योंकि धरती बीमार हो गयी है, प्रदूषण छा गयी है | धरती आदमियों के रहने योग्य नहीं रह जायेगी, ऐसा लोगों का कहना है | इस ढंग से मानव कहाँ रहेगा? यदि धरती को मानवों के न रहने योग्य बनाना है तब विकास का क्या मतलब है? विकल्प के अनुसार चेतना विकास का मतलब ही जागृति है | जागृति का मतलब समझदारी, समझदारी का मतलब ईमानदारी, ईमानदारी का मतलब जिम्मेदारी, जिम्मेदारी का मतलब भागीदारी है | इस प्रकार मानव अपने जिम्मेदारियों को समझने एवं निर्वाह करने योग्य होता है |

अभी तक मानव एक दूसरे पर शिकायत करना ही जाना है | शिकायत से उपलब्धि क्या है? वह भी केवल भौतिक, रासायनिक वस्तुओं की सीमा में ही सब के सब शिकायतें हैं | जबकि मानव, मानव के साथ जीना कृतज्ञता के साथ होता है | कृतज्ञता ही विश्वास का आधार है | कृतज्ञता के बिना विश्वास पैदा नहीं होता, इसे हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है | इस विधि से अभी तक जीवों से अच्छा जीने के क्रम में अथवा जीने के लिये जितना भी प्रयास किया है उसका मूल्यांकन करना ही होगा | संग्रह, सुविधा से मुक्त होकर समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना मानव में अथवा सर्वमानव में सर्वशुभ होने का प्रमाण है | यही मानव में सर्वमंगल है | अर्थात सर्वशुभ ही सर्वमंगल है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज